भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में रमानंदन मिश्र की भूमिका अवलोकन

सुनिल कुमार यादव
शोधार्थी
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
मोबाईल नं0– 8210748434

गाँधी जी की सलाह पर बाद में स्व० मगनलाल गाँधी की स्मृति में मगन आश्रम की स्थापना लहेरियासराय से 5 कि०मी० दूर स्थित मंझौलिया गाँव में रामनन्दन बाबू ने 1929 में की थी। उस आश्रम में उस समय 9 व्यक्तियों ने रहना शुरू किया था। वह आश्रम जाति प्रथा तथा पर्दा प्रथा से मुक्त था। वे अपने ही गाँव के एक युवक जगदीश चौधरी से 10 कट्ठा जमीन खरीदकर इस आश्रम का निर्माण कराया था। वे जाति तथा वर्ग के बीच अन्तर नहीं रखते थे। ये मगन आश्रम मिथिलांचल के मध्य में था, जिसपर क्रान्तिकारियों का झण्डा फहरा रहा था। सबसे दुखद पहलू ये था कि कोई भी राजनीतिज्ञ या स्वतंत्रता सेनानी इस आश्रम को पसंद नहीं करते थे। कुछ लोगों द्वारा इस बात को खुले तौर पर विरोध भी किया जाता था लेकिन अकस्मात बिहार के तत्कालीन एक प्रतिष्ठित नेता व्रजकिशोर प्रसाद इन सबो के कार्यकलापों को देखकर मदद में लग गये। गाँधी जी उनका सहयोग समय–समय पर पत्राचार द्वारा आदान–प्रदान करते रहते थे। आर्थिक मदद का साधन सिर्फ खाद ग्रामोद्योग द्वारा बेचे गए कपड़ों से था। कुछ दिनों बाद 1930–31 में जब नमक सत्याग्रह आन्दोलन तथा नमक बनाने का कार्य पूरे देश में होने लगे। 17 अप्रील 1930 को रामनन्दन मिश्र ने इस जिले के पिपरा से नमक बनाने की शुरूआत अपने नेतृत्व में किया। यह जत्था दरभंगा शहर होते हुए निकला, जिसमें रामनन्दन बाबू को गिरफ्तार कर 18 महीने के लिए जेल भेज दिया। रामनन्दन बाबू ने कहा था।

17 अप्रील 1930 को मैं गिरफ्तार हुआ और समाज विद्रोह का प्रतीक मगन आश्रम विद्रोह की ज्वाला में भड़का और स्वयं सरकार के कोपानल में धू–धूकर जल उठा। उसी क्रम में सरदार बल्लभ भाई पटेल 9 दिसम्बर 1929 को दरभंगा आप और मगन आश्रम भी गये। उन्होंने दरभंगा शहर की आम सभा में अपने भाषण में रामनन्दन मिश्र की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। उसी समय 1930–31 मैं सविनय अवज्ञा का दूसरा ऐतिहासिक आंदोलन गाँधी जी ने दांडी मार्च कर समुद्र किनारे से नमक बनाने की शुरूआत की थी।

वर्ष 1931 में पटना में जब. काँग्रेस सोश्लिष्ट पार्टी का गठन हुआ तो रामनन्दन बाबू उसमें शामिल हो गये। आचार्य नरेन्द्र देव उस समय पार्टी के अध्यक्ष पद पर थे। उन्होंने पार्टी संगठन को मजबूत करने में डॉ० लोहिया, श्री जय प्रकाश नारायण आदि कई राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के साथ लग गये। पुनः देश की आजादी के उद्देश्य से हथियार बंद दस्ते के गठन करने में लगे रहे। ये सभी नेता गुप्त रूप से महात्मा गाँधी के सम्पर्क में रहा करते थे। काँग्रेस के अन्दर से ही समाजवादी विचारधारा का प्रचार करने के लिए इस पार्टी की स्थापना की गयी थी। इसके पीछद्य पंडित जवाहरलाल नेहरू का आशीर्वाद एवं सहयोग था। वे स्वयं रूसी क्रांति से प्रभावित थे तथा सोवियत रूस की यात्रा कर आये थे। डॉ० लोहिया तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं के साथ रामनन्दन बाबू ने भी इस पार्टी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

आजादी प्राप्त करने के लिए 'सशस्त्र क्रान्ति' में विश्वास करनेवाली इस पार्टी के प्रायः सभी नेता गाँधी जी के नजदीक थे। उनके सिद्धांत तथा कार्यशैली इन दोनों से वे प्रभावित थे। स्वतंत्रता की अंतिम लड़ाई 1942 की अगस्त क्रान्ति में 'काँग्रेस सोश्लिष्ट पार्टी' के नेता तथा कार्यकर्त्ता अग्रिम पंक्ति में थे। 9 अगस्त को 'करो या मरो' तथा भारत छोड़ो आंदोलन में काँग्रेस के प्रायः चोटी के सभी नेता बम्बई और अन्य जगहों पर गिरफ्तार हो चुके थे, और जो कुछ नेता बच गए थे, उनमें समाजवादियों की संख्या अधिक थी। इन लोगों ने भूमिगत होकर क्रान्ति को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया, उनमें पंडित रामनन्दन मिश्र एक अगुआ नेता थे। इन नेता का केन्द्र बम्बई में था। वहाँ संचालन करनेवाली सोश्लिष्ट नेता श्रीमती अरूणा आसप अली थी। वहाँ निर्णय हुआ कि पंडित रामनन्दन मिश्र मद्रास चले आएँ, वहाँ एक गुप केन्द्र स्थापित कर कार्य को आगे बढ़ायें। मद्रास में वे गिरफ्तार हो गए। वहाँ उन्हों अपना कार्य किसी और को सौंपकर कटक चले गये। बाद में उन्हें बहरामपुर जेल भे दिया। संयोगवश अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में उन्हें बिहार के हजारीबाग केन्द्रीय जे में स्थानान्तरित कर दिया गया। संयोग वश वहाँ दरभंगा के प्रख्यात क्रान्तिकारी सूर नारायण सिंह तथा मिथिलांचल के दूसरे प्रख्यात क्रान्तिकारी नेता योगेन्द्र शुक्ल उसी जेल में उस समय रामवृक्ष बेनीपुरी तथा जय प्रकाश नारायण भी थे। इन सबों मिलकर जेल से भागने का निर्णय लिया। बाहर अगस्त क्रान्ति की ज्वाला धधक र थी, और ये आजादी के दीवाने जेल में बन्द रहे। ये तो बिल्कुल असहय था और सम भी बहुत कम था।''

8 नवम्बर 1942 को दिवाली की अंधकारपूर्ण रात्री थी। अन्दर से बेनी जी 'दिवाली फिर आ गयी सजनी' गा रहे थे। जेल के वार्ड द्वारा अन्य कैदियों । साथ लेकर घूम रहे थे। उसी क्रम में रात्रि के 9:30 बजे में सभी नेताओं जय प्रक नारायण, योगेन्द्र शुक्ला, सूरज नारायण सिंह, रामनन्दन सिंह, गुलारी प्रसाद, शालिग्राम सिंह काफी मशक्कत के बाद जेल की 17 फीट

ऊँची दीवार को फाँदक भाग निकले। एक नया सुनहरा अध्याय इन क्रान्तिकारियों द्वारा भारतीय स्वतंत्रत आंदोलन के इतिहास में जुड़ गया। वे सभी रात में भटकते हुए दूसरे दिन मंझवा पहुँ जहाँ रामनन्दन बाबू के श्वशुर जी त्रिवेणी प्रसाद सिंह ने उन सबों को खूब आद सत्कार के साथ भोजनादि की पूरी व्यवस्था की। इसके बाद वे सभी दो दलों बँटकर दो तरफ निकले। रामनन्दन मिश्र जय प्रकाश जी के साथ वाराणसी पहुँच उसके बाद वे वहाँ से दिल्ली गये। वहाँ उन्होंने आरूणा आसफ अली से भेंट क जिन्हें पुनः वहाँ से पंजाब भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने बम बनाने का काम बखूड किया।

इस बात का जिक्र बेणीपुरी जी ने अपनी पुस्तक 'जंजीर' तथा दीवारें । करते हुए लिखा है– महात्मा बुद्ध ने जब आधी रात को जो अद्‌भुत यात्रा की, बौद्ध साहित्य में इसे महाभिनिष्क्रमण का नाम दिया गया है। हमारे साथियों ने 9 नवम्बर क रात में अलंध्य दीवार को पारकर जो पलायन किया, उसे 'महापलायन' का नाम क्या न दिया जाय। इन दोनों में एक महान आदर्श काम कर रहा था। दोनों में सारे संसान के मोहमाया को पीछे छोड़ा जा रहा था।

दोनों के मूल में यह निश्चय– 'करो या मरो' का था। वैसा ही घो अन्धकार। किन्तु कुमार सिद्धार्थ घोड़े पर जा रहे थे और ये छः जो रात को चले उनके पैरों में जूते नहीं थे। आज दिवाली है। जय प्रकाश जी ने 10 दिनों से दाही नहीं बनायी। वे कहते हैं कि इस शक्ल में कैसा दीख रहा हूँ।

शुक्ला जी बार–बार मेरे पास आते हैं और कहते हैं, वह कविता सनाओ–वही ट रही है जजीर, जब मैं गान लगता हूँ, वे मस्त हो जाते हैं।

कई जेलों से उन्होंने भागने की चेष्टा की। आज उनकी चिर संचित अभिलाषा पूरी होने जा रही है। रामनन्दन के चेहरे पर भी उमंग है। ये नई धून तो उन्होंने ही लगाई है।

सूरज का क्षत्रित्व जाग उठा है।
गुलाली ने इतने दिनों तक इसी दिन के लिए कसरत की है। शालीग्राम को पथ

प्रदर्शन करना है।

जेल की दीवार फाँदने की क्रिया में दीवार के निकट एक टेबुल रख दिया गया था। उस पर शुक्ला जी खड़े हो गये। शुक्ला जी के कंधे पर गुलाली और गुलाली के कंधे पर चढ़कर सूरज बाबू ने दीवार को पार किया। सूरज बाबू की कम से बंधी धोती के सहारे जय प्रकाश जी, शालीग्राम सिंह और रामनन्दन बाबू उस पान गए। फिर गुलामी तथा शुक्ला जी गये। शुक्ला जी के बाद रस्सी में सामान बाँध गया। परन्तु उस पार से खींचते समय गठरी का बँधन टूट गया। सामान की गठरी जेल के अन्दर ही रह गयी। जिसमें जूते–कपड़े, खाने के सामान आदि थे। रामनन्दन बाबू का कोट भी वहीं छूट गया, जिसके जेब में कुछ रूपये भी थे।

जय प्रकाश तथा रामनन्दन बाबू दिल्ली में थे, उस समय रामनन्दन बाबू अरूणा आसक अली, तथा जय प्रकाश जी बीजू पटनायक से भेंट कर विमर्श किया वित तत्कालीन 'बायसराय' के महल को बम से उड़ा दिया जाय। रामनन्दन बाबू वहाँ से आगे की ओर बढ़े। सितम्बर में कॅपानेवाले जाड़े में पंडित रामनन्दन मिश्र लाहौर स्टेशन पर ट्रेन से उतरे। श्रीमती अरूणा आसफ अली द्वारा बताये गए कुछ व्यक्तियों तथा जगहों से उन्होंने सम्पर्क किया। पंजाब में बिखरे हुए कार्यकर्ताओं को पुनः इकट्ठा करने, धन संग्रह करने तथा गुप्त केन्द्रों को स्थापित करने में इन्हें करीब दो महीने लग गए। लाहौर में एक विशाल सभा के आयोजन करने में वे व्यस्त थे। इस कार्य मैद्य ताँगा पर घूमते हुए माल रोड पर 22 फरवरी 1943 को पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लाहौर किला में रखा। उस रात से जिस तरह की यातनाएँ उन्हें देने की शुरूआत हुईद्यद्य वह जुलाई के अन्त तक यानि साढ़े पाँच महीने क्रमशः जारी रहा। यातना देने का मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी संगठन के गुप्त भेदों तथा अड्डों का उनसे पता लगाना था उन्हें बहुत से लोभ लालच भी दिए गये, फिर भी रामनन्दन बाबू ने किसी लेखक की इन दो पंक्तियों को बार–बार दुहराया

कीमत में मत कोहिनूर दिखलाना ऐ अभिमानी।
किस कीमत पर बेचूँ अपने दिल की भरी कहानी।''

बाद में काफी प्रयास के बाद लाहौर किले के उत्पीड़न से उबरने को लिए उन्हें कसूर सब जेल में बदल दिया गया। वहाँ पुरूषोत्तम दास, त्रिकरण दास (बम्बई के विख्यात वकील तथा काँग्रेस सोश्लिष्ट पार्टी के नेता) चन्द्रकान्त मोदी तथद्यद्य बलराम भसीन के साथ रामनन्दन भी रहते थे। वहाँ लाहौर किले का एक नरपिशाच रावर्टसन (डी० आई० जी०, सी० आई० डी०) मिलने आया। उनकी बातों से यह स्पष्ट था कि जय प्रकाश नारायण भी गिरफ्तार होकर लाहौर जेल में ही बन्द हैं। उसको जाने के बाद रामनन्दन बाबू जेल में ही उदास मन बैठे सोच रहे थे कि ऐसा संभव नहीं लगता कि जय प्रकाश जी इस तरह के अमानवीय व्यवहार को सहन कर सकेंगे।'' सोचकर भी वे इस स्थिति में नहीं थे कि उनके लिए कुछ विशेष रूप से किया जा सके।

भारत के आजाद होने के बाद भी रामनन्दन बाबू का जीवन संघर्ष में हद्यद्य बीतता रहा। जमींदार तथा सरकार के साथ संघर्ष जारी रहा। जेल से छूटने के बाद 1952 के प्रथम चुनाव तक पं० रांगनन्दन मिश्र ने बिहार सोश्लिष्ट पार्टी के महामंत्री हिन्द किसान पंचायत के नेता तथा भारतीय समाजवादी आंदोलन के राष्ट्रीय स्तर को नेता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। इस बीच में शायद ही कोई ऐसा दिन बीततद्यद्य होगा, जिस दिन वे एक न एक सभा अथवा बुद्धिजीवियों की बैठक

की संबोधित न करते हों। वे हिन्दी के अत्यंत ही तेज एवं एक प्रभावशाली वक्ता थे। उनके वक्तव्य से जय प्रकाश नारायण भी काफी आकर्षित हुए थे।''

पंडित रामनन्दन मिश्र को एक ऊर्जावान लेखिनी भी थी अर्थात् वे एका सफल लेखक भी थे। सोश्लिष्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक जनता में उनको आलेख निरंतर छपते रहते थे जिनमें वे समाजवादी सिद्धान्त एवं कार्यक्रम की व्याख्यद्य अत्यंत स्पष्ट रूप से करते थे। मिथिलांचल के असंख्य छात्र और युवा समुदाय रामनन्दन बाबू के चुम्बकीय व्यक्तित्व एवं पाण्डित्य से प्रभावित था।

समाजवादी पार्टी जिसका लक्ष्य बिहार के प्रथम आम चुनाव में सत्ता हासिल करना था, बिहार विधान सभा में उन्होंने मात्र 23 सीटें ही जीत सकी। इसद्यद्य प्रकार इस पार्टी की करारी हार हुई। चुनाव के पूर्व का अंदरूनी आपसी संघर्ष समाप्त नहीं हुआ था। रामनन्दन बाबू भी लोकसभा चुनाव दरभंगा से हार चुके थे। लोकसभा चुनाव के बाद राज्य सभा के चुनाव की बारी आयी, जिसमें इस पार्टी से रामनन्दन बाबू को विधानसभा का प्रत्याशी बनाया गया। पार्टी की अन्दरूनी कलह के कारण द्यद्य इस बार भी चुनाव वे नहीं जीत सके। उनका नामांकन रद्द हो गया और दूसरा प्रत्याशी राज्यसभा की जीत दर्ज की।

9 अप्रील 1952 को एक ऐसी घटना हुई, जिसने रामनन्दन बाबू की धारा को ही पलट दिया। उस दिन सोश्लिष्ट पार्टी का बिहार प्रान्तीय कार्यसमिति ने उनके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की। समिति के अनुसार उनका दोष यह था कि उन्होंने इस अवसर के लिए सोश्लिष्ट पार्टी किधर? नाम से एक पर्चा लिखा था। इसी पर्चे में लिखा था कि सोश्लिष्ट पार्टी अपने जीवन के दूसरे मोर पर खड़ी है। इस पर्चे को पढ़कर कुछ साथियों ने नाराजगी भी व्यक्त की। दूसरे दिन 10 अप्रील को पटना के अंजुमन इस्लामियां हॉल में बिहार प्रान्तीय समाजवादी सम्मेलन हुए। वर्षी 1934 में वहीं काँग्रेस सोश्लिष्ट पार्टी की स्थापना भी हुई थी। ठीक 18 वर्षों के बाद ही पार्टी के विखरने की प्रक्रिया शुरू हो गयी। पूर्व में पंडित रामनन्दन मिश्र का भाषण हुआ, जिसमें अन्य नेताओं के अतिरिक्त जय प्रकाश नारायण पर भी अपमानजनकद्य शब्दों को व्यवहृत किया गया था। पं० मिश्रा के बोल चुकने के बाद जय प्रकाश नारायण जी बोलने के क्रम में अपने बचाव में रो पड़े। स्वभावतः जय प्रकाश जी को प्रति आम कार्यकर्ताओं तथा नेताओं की सहानुभूति बढ़ गई थी।

दूसरे दिन 11 अप्रील को पंडित रामनन्दन मिश्र जय प्रकाश जी से मिलने गए और व्यंग्य के लहजे में कहा– आपके ये आँसू हमारे राजनीतिक जीवन पर कोई भी असर नहीं कर सकता है।'' इसके बाद पंडित मिश्र सीधे महेन्द्र घाट आए। और वहाँ से अपने घर दरभंगा चले गए। पंडित मिश्र की उज्जवल छवि उसी समय से पार्टी के लिए शिथिल पड़ गई। जिस पार्टी को उन्होंने पूरी शक्ति और योग्यता से जन्म से सींचकर बड़ा करने का काम किया था, क्षण भर में उन्होंने उससे नाता तोड़ा लिया। वे भारत के कुछ समाजवादी आंदोलन के नेताओं में अग्रणी थे।

दरभंगा लौटने के बाद पं० मिश्रा में अपना मार्ग ही बदल लिया। यहाँ लौटने पर उन्होंने चाय, सिगरेट तथा पुस्तकों के लेखन एवं प्रकाशन में व्यतीत किया उन्होंने संभवतः यह निष्कर्ष निकाला कि मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से निकलकर।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शर्मा (डा.) आर.ए. व चतुर्वेदी (डा.) शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउसः मेरठ, पृष्ठ 648–649
2. अग्रवाल, जे.सी, 21वीं शताब्दी के संदर्भ में माध्यमिक शिक्षा पर दृष्टिकोण, अग्रवाल पब्लिकेशन्सः आगरा पृष्ठ 340–341
3. सिंह (डा.) कर्ण, भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास, एच.पी. भार्गव बुक हाउसः आगरा, पृष्ठ 345–361
4. भट्टाचार्य (डा.) जी.सी., अध्यापक शिक्षा , अग्रवाल पब्लिकेशन्स : आगरा, पृष्ठ 326–347
5. मंगल (डा.) के.पी., आधुनिक भारतीय शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स : आगरा, पृष्ठ 83–84 पाठक, पी.डी., भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, अग्रवाल पब्लिकेशन्सः आगरा पृष्ठ 336–337
6. सक्सेना, एन.आर., मिश्रा, बी.के. व मोहन्ती, आर. के., अध्यापक शिक्षा, आर. लाल बुक डिपोः मेरठ
7- मदान, पूनम : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।